युवा हिन्दी संस्थान फुलब्राइट-हेज़ ग्रुप प्रोजेक्ट ऐब्रॉड पाठ्यक्रम विकास परियोजना 2022

YHS FULBRIGHT-HAYS GPA CURRICULUM DEVELOPMENT PROJECT 2022

अशोक ओझा, ममता त्रिपाठी और नीना सरीन

Fulbright-Hays Group Project Abroad Hindi Curriculum Development Project: An Overview

फुलब्राइट-हेज़ ग्रुप प्रोजेक्ट ऐब्रॉड हिन्दी पाठ्यक्रम विकास परियोजना: संक्षिप्त विवरण

जैव विविधता में संतुलन

अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए औद्योगीकरण में तल्लीन मनुष्य प्राकृतिक संसाधनों की अंधाधुन्ध खपत करता जा रहा है; क्या यह एक परजीवी की तरह जीना नहीं है? वह यह बात भूल गया है कि उसका भी प्रकृति के प्रति एक उत्तरदायित्व है जिसके आधार पर ही उसका भविष्य सम्भव है। इस धरती की जैव विविधता ही उसका पालन पोषण करती है न कि वह धरती का। यहाँ पर एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह भी उठता है कि आधुनिक विज्ञान की चकाचौंध से प्रभावित शहरी मनुष्य प्रकृति में संतुलन बनाये रखने के लिए अगर कुछ कर रहा है तो क्या कर रहा है? लेकिन ऐसे भी समुदाय हैं जो दैनिक जीवन में भी प्रकृति के साथ पारस्परिक संतुलन बनाते हुए आराम से जीवन व्यापन करते हैं। ये समुदाय प्रकृति से उतना ही लेते हैं जितना उनको जीविका चलाने के लिए चाहिए न कि धन अर्जित करने के लिए! वे प्रकृति को भी बदले में कुछ न कुछ देते हैं चाहे वो पेड़ पौधों का सही तरीक़े से उपयोग हो या नदी तालाबों की, धार्मिक अनुष्ठानों के माध्यम से, देखभाल हो। पीढ़ी दर पीढ़ी इस आदान प्रदान की प्रथा को जारी रखते हैं। क्या यह पारम्परिक जानकारी विलुप्त हो रही है? इन समुदायों में प्रचलित सांस्कृतिक प्रथाओं का क्या कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है?

फुलब्राइट-हेज़ ग्रुप प्रोजेक्ट ऐब्रॉड कार्यक्रम के प्रतिभागियों ने जलवायु परिवर्तन और शाश्वत प्रथाओं का अध्ययन करने और इन विषयों पर शिक्षण सामग्री विकसित करने के लिए निम्नलिखित क्षेत्रों में अध्ययन किया:

- नैनीताल,उत्तराखंड
- देहरादून, उत्तराखंड
- डहाणू, महाराष्ट्र
- अलवर, राजस्थान

नैनीताल, उत्तराखंड

- कुमाऊँ विश्वविद्यालय
- नैनी ताल- पर्यावरण विद् प्रोफेसर अजय रावत से भेंट
- बलिया नाला भूस्खलन
- जंगलों का संरक्षण और सफाई

ऐपण: उत्तराखंड की प्रचलित लोककला

अवैध अनियंत्रित निर्माण से भरता हुआ नैनीताल

जिला प्रशासन द्वारा जनहित में जारी सूचना

नैनी झील के किनारे, नीले गगन के तले
हमारा कॉन्फरेन्स रूम

ताल किनारे स्थानीय स्वयंसेवकों और
पर्यावरण विद् से जानकारी और वार्तालाप

जय जननी जय भारत गैरसरकारी संस्था के वृक्षारोपण और जंगल सफाई के प्रयास जारी

बलिया नाला जैसे कई संवेदनशील इलाकों में भूस्खलन की प्रचंड समस्या

पारंपरिक प्रथाएँ- महिला सशक्तिकरण

देहरादून, उत्तराखंड

नवधान्य जैव विविधता संरक्षण केंद्र

पर्यावरण कार्यकर्ता वंदना शिवा जी से बातचीत

बीज से अनाज तक की खेती के कुछ के अनुभव

सिंहनीवाला गाँव की महिला किसानों से बातचीत

नवधान्या जैव विविधता फ़ार्म की संस्थापक वंदना शिवा जी के साथ अमेरिका से गए प्रतिभागी

उचित व्यापार के सिद्धान्त

मानक–

- आर्थिक रूप से पिछड़े हुए किसानों को उचित व्यापार प्रदान करना
- पारदर्शिता एवं जबाब देही।
- क्षमता विकास।
- नीतिगत् व्यापार को बढ़ावा देना।
- लिंग– भेद समानता।
- कार्य क्षेत्र में कार्य करने की परिस्थितियां।
- समुचित मजदूरी भुगतान।
- पर्यावरण् की रक्षा एवं सुरक्षा।
- बाल–अधिकारों की सुरक्षा।
- व्यापारिक सम्बन्ध।

कई तरह के अनाज की सूखी हुई बालियों को रस्सी पर लटका कर संरक्षित किया गया है

सूखी हुई लौकी, तुरई, गिलकी आदि के खोलों में भी बीजों को संग्रहीत किया जाता है

धान की कुटाई

मंडुए की मंडाई

जैविक खाद बनाने की विधि का प्रदर्शन

महिला किसानों से बातचीत

नवधान्य फार्म पर उपजे अनाज, फल और सब्जियों से बना पौष्टिक नाश्ता

वार्ली समुदाय- लोककला और शाश्वत प्रथाएँ

डहाणू , महाराष्ट्र

वर्ली कला: लग्न चौक; खेती और पशुपालन; बीज बुवाई से अनाज उपज तक के चरणों को दर्शाते कुछ चित्र

सावेली : चावल के आटे से बना एक व्यंजन जिसे बहोनीय वृक्ष के पत्तों के बीच लेप कर भाप में पकाया जाता है।

पेटा:पत्तों से बना प्राकृतिक भंडारण

ताड़ के पेड़ से किण्वित रस उत्पादन: प्रकृति से नपा तुला लेन-देन

शाश्वत प्रथाएँ

दि ठाणे जिल्हा मध्यवर्ती सहकारी बँक लि.ठाणे
यांचेशी संलग्न
पेपर मेसी स्वयंसहाय्यता महिला गट ,रामखिंड जव्हार
ता.जव्हार, जि.पालघर.
पेपरच्या लगद्या पासुन बनविलेल्या वस्तु.
Mob - 9226210438

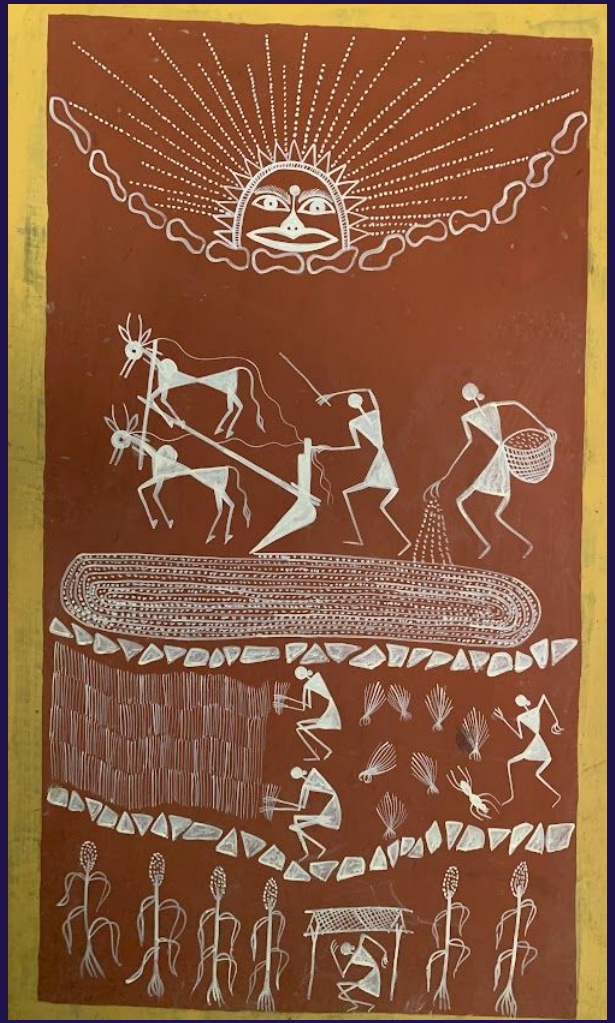

वार्ली कार्यशाला

अलवर, राजस्थान

- तरुण भारत संघ
- सारिका बाघ रिजर्व
- स्थानीय लोगों से बातचीत

तरुण भारत संघ का जल-जन को जोड़ने का अभियान जल से बिरादरी और संकल्प

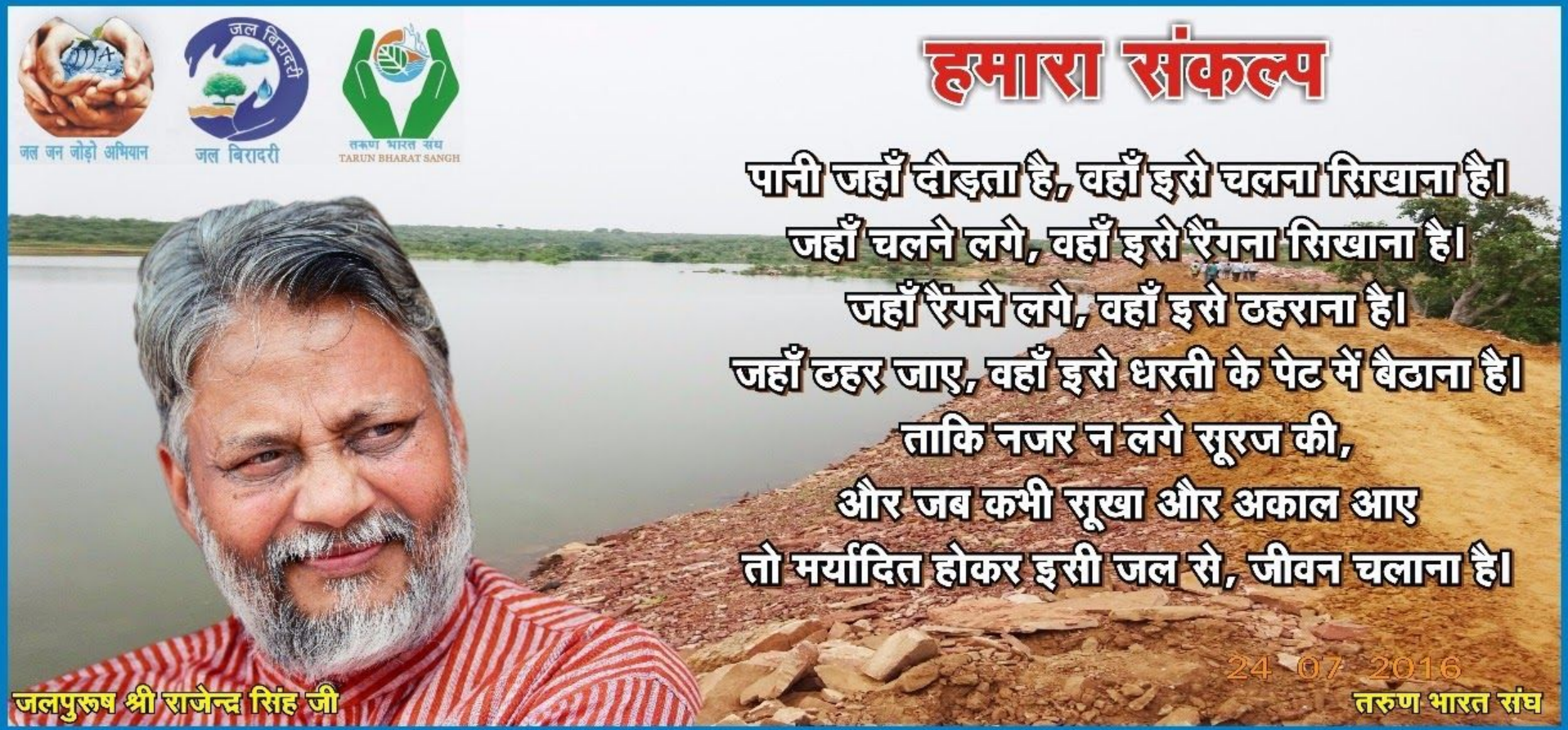

- तरुण भारत संघ- नारा
- जल संरक्षण जोहाड़ मॉडल
- कार्यकर्ताओं द्वारा बनाई गयी बावड़ी

एकत्रित हुए जल से सींचे गए सरसों के हरे भरे खेत

पानी एकत्र करने के लिए जोहाड़ निर्माण

सूखी पड़ी हुई नदी तलहटियाँ अब पानी से भरती जा रही हैं ! TBS की परियोजनाओं का सर्वेक्षण

स्थानीय बच्चों से बातचीत - गाँव खुशहाल तो बच्चे खुशहाल

पाल/जोहाड़ के सफल कार्य का निरीक्षण-अब गाँवों में पलायन के विपरीत घर वापसी हो रही है ।

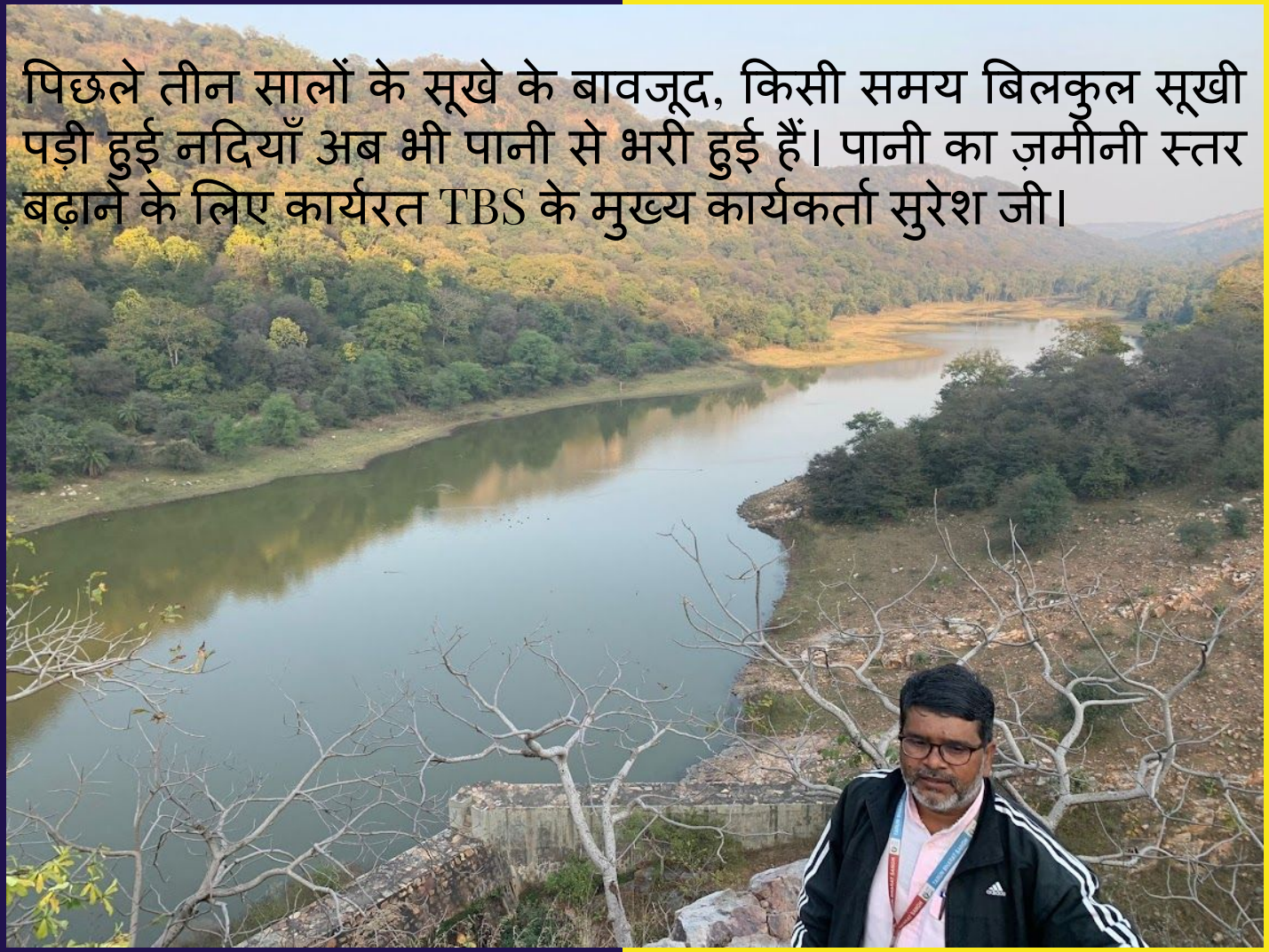

पिछले तीन सालों के सूखे के बावजूद, किसी समय बिलकुल सूखी पड़ी हुई नदियाँ अब भी पानी से भरी हुई हैं। पानी का ज़मीनी स्तर बढ़ाने के लिए कार्यरत TBS के मुख्य कार्यकर्ता सुरेश जी।

धरती पर जैव विविधता को संरक्षित करने का एक प्रयास- सरिस्का

कार्यक्रम का तीसरा चरण

एकत्रित की गयी शिक्षण संबंधी सामग्री:

1. विडियो/वृत्तचित्र
2. छायाचित्र
3. स्थानीय कला कृतियाँ
4. किताबें

जलवायु परिवर्तन, शाश्वत प्रथाएँ, स्थानीय जननायक, जैविक खेती, महिला सशक्तिकरण, लोक कथाओं, इत्यादि पर स्कूलों व विश्वविद्यालयों के लिए निम्नलिखित सामग्री को विकसित करना:

1. पाठ्यक्रम
2. पाठ योजनाएँ
3. शिक्षकों के लिए शिक्षण संबंधी सहायक सामग्रियाँ